1
२४
अहिंसा परमो धर्मः

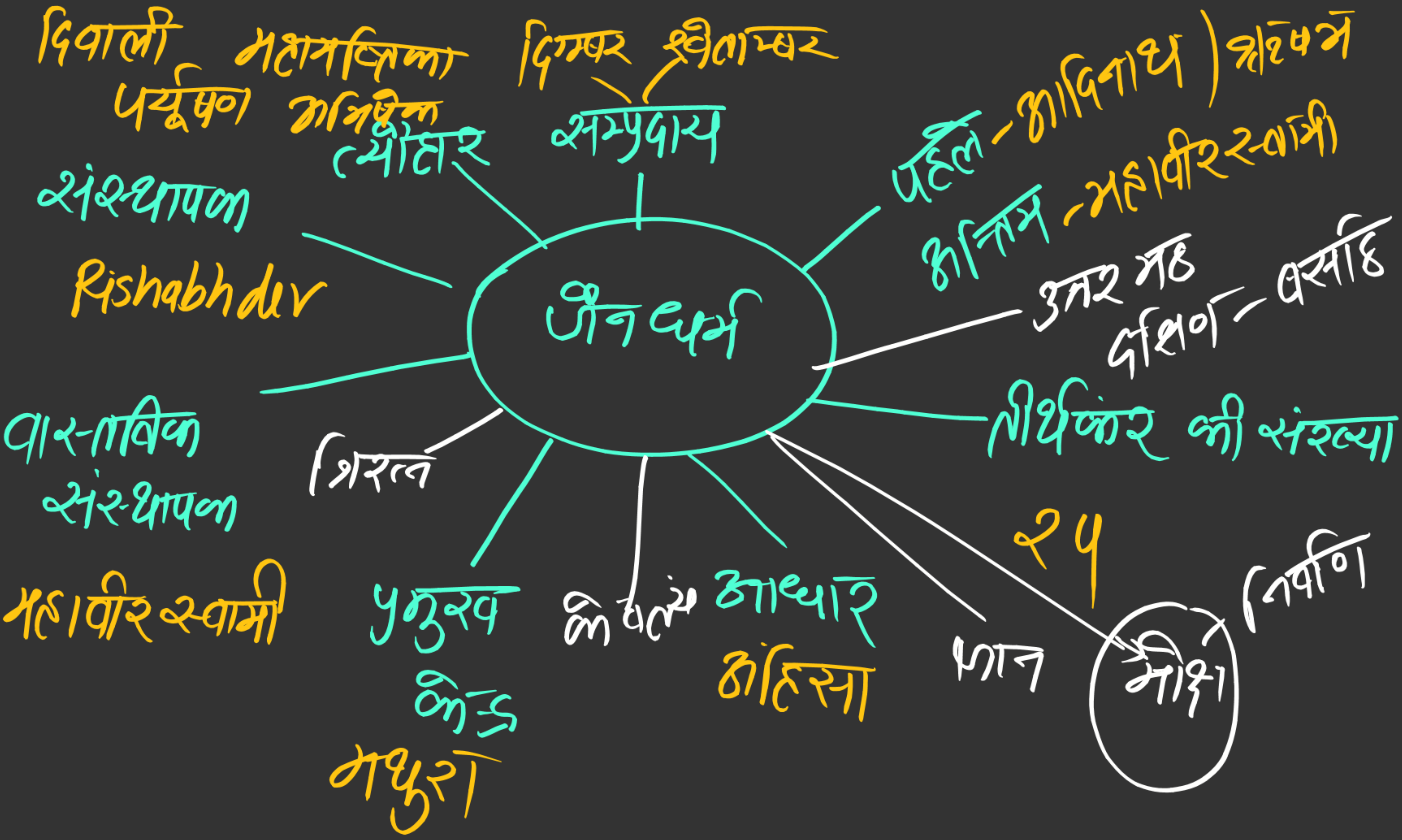

जैन धर्म
त्यौहार
दिवाली
महामस्तका
पर्यूषण
अभिषेक
सम्प्रदाय
दिगम्बर
श्वेताम्बर
पहले - आदिनाथ) ऋषभदेव
अन्तिम - महावीर स्वामी
उत्तर मठ
दक्षिण - बसदि
तीर्थंकर की संख्या
24
निर्वाण
मोक्ष
ध्यान
आधार
अहिंसा
कैवल्य
प्रमुख
केन्द्र
मथुरा
त्रिरत्न
वास्तविक
संस्थापक
महावीर स्वामी
संस्थापक
Rishabh dev

- जैन धर्म का आधार अहिंसा है
- जैन धर्म का प्रमुख केंद्र मथुरा था
- जैन धर्म में 24 तीर्थंकर हुए जिसमे पहले ऋषभ देव तथा अंतिम महावीर स्वामी है
- ऋषभ देव जैन धर्म के संस्थापक माने जाते है
- जबकि महावीर स्वामी जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक है
- जैन धर्म में सम्पूर्ण ज्ञान को केवल्य कहते है
- जैन धर्म में मोक्ष को निर्वाण कहा जाता है

- The basis of Jainism is non-violence
- Mathura was the main center of Jainism.
- There are 24 Tirthankaras in Jainism, the first of which is Rishabh Dev and the last is Mahavir Swami.
- Rishabh Dev is considered the founder of Jainism.
- Whereas Mahavir Swami is the real founder of Jainism.
- In Jainism, complete knowledge is called Kevalya.
- In Jainism, salvation is called Nirvana.

(1) मतिज्ञान matigyan

(2) श्रुतिज्ञान

(3) अवधि ज्ञान

(4) मन पर्याय

(5) कैवल्य — सम्पूर्ण ज्ञान

वाला व्यक्ति — केवलिन

मोक्ष — निर्वाण

- स्यादवाद और अनेकांतवाद जैन धर्म से सम्बंधित है
- उत्तर भारत में जैन भिक्षु के निवास स्थान को मठ कहा जाता है तथा दक्षिण भारत में इन मठो को बसठी कहा जाता है
- जैन धर्म का प्रमुख मंदिर दिलवाडा जैन मंदिर है जो ऋषभ देव को समर्पित है इस मंदिर का निर्माण वास्तुपाल और तेजपाल द्वारा करवाया गया था ये राजस्थान के सिरोही जिले में माउंट आबू पर्वत पर स्थित है
- जैन धर्म के अध्यात्मिक विचार संख्या दर्शन से प्रेरित है
- जैन धर्म में पांच ज्ञान बताये गए है जो क्रमशः है ..मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान, अवधिज्ञान ,मन पर्याय, केवल्य.

- Shayadvad and Anekantvad are related to Jainism.
- In North India, the place of residence of a Jain monk is called a monastery and in South India, these monasteries are called Basathi.
- The main temple of Jainism is Dilwara Jain Temple which is dedicated to Rishabh Dev. This temple was built by Vastupala and Tejpal. It is situated on Mount Abu in Sirohi district of Rajasthan.
- The spiritual ideas of Jainism are inspired by numerical philosophy.
- There are five knowledge mentioned in Jainism which are respectively.. Matigyan, Shruti Gyan, Avadhi Gyan, Man Paryaay, Kevalya.

- जैन धर्म का प्रमुख साहित्य आगम को माना जाता है
- जिसमे बारह अंग या उपांग, दस प्रकीर्ण, छह छेद सूत्र व् चार मूलसूत्र होते है
- चौदह पूर्वा ग्रन्थ महावीर स्वामी की जानकारी देता है
- कल्पसूत्र ग्रंथ भद्रबाहु द्वारा संस्कृत भाषा में लिखी गयी
- भगवती सूत्र जैन ग्रन्थ है जिसमे 16 महाजनपद की जानकारी मिलती है जो प्राकृत भाषा में शुधर्मन द्वारा लिखा गया था

- Aagam is considered the main literature of Jainism.
- In which there are twelve organs or appendages, ten scattered, six sutras and four basic sutras.
- Chaudah Purva texts give information about Mahavir Swami
- Kalpasutra written in Sanskrit language by Bhadrabahu
- Bhagwati Sutra is a Jain text which contains information about 16 Mahajanapadas which was written by Shudharman in Prakrit language.

- मगध में अकाल पड़ने की वजह से जैन धर्म दो भागो में बट गया. जैन धर्म में दो प्रमुख संप्रदाय है स्वेताम्बर और दिगम्बर, श्वेताम्बर- सफ़ेद वस्त्र पहनते है और गृहस्थ जीवन जीते है और श्वेताम्बर का मुखिया स्थूल भद्र को माना गया है. जबकि दिगम्बर के मुखिया भद्र बाहू है दिगंबर संप्रदाय नग्न अवस्था में रहते है और ब्रह्मचर्य का पालन करते है
- जैन धर्म में शामिल होने वाली पहली महिला चंपा/चंदना/चंदनबाला थी

- Due to famine in Magadha, Jainism got divided into two parts. There are two main sects in Jainism, Swetambara and Digambara. Shwetambara - wear white clothes and live a household life and the head of Shwetambara is considered to be Sthool Bhadra. While the head of Digambara is Bhadra Bahu, Digambara sect lives in naked state and follows celibacy.
- The first woman to join Jainism was Champa/Chandana/Chandanbala

दक्षिण भारत के राजाओं जैसे राष्ट्रकूट, गंग, ने भी इस धर्म को प्रश्रय दिया। गंग वंश के सेनापति चामुण्डराय ने 940 ई. में श्रवनवेलगोला में एक बाहुबली जिन (18 meter) की मूर्ति का निर्माण कराया। जिसे गोमतेश्वर की मूर्ति कहते हैं।

चालुक्य शासकों व चन्देल शासकों ने भी इस धर्म को प्रश्रय दिया। चन्देल शासक धंग के शासन काल में खजुराहो में जैन मंदिरों का निर्माण हुआ।

The kings of South India like Rashtrakutas, Gangas also patronized this religion. Chamundaraya, the commander of the Ganga dynasty, built a Bahubali Jin idol in 940 AD at Shravanavelgola. Which is called the idol of Gomateshwara.

Chalukya rulers and Chandela rulers also gave patronage to this religion. Jain temples were built in Khajuraho during the reign of Chandela ruler Dhang.

महामस्तकाभिषेक एक जैन त्योहार है, जो भगवान बाहुबली की प्रतिमा का अभिषेक करने के लिए मनाया जाता है. यह त्योहार हर 12 साल में एक बार कर्नाटक के श्रवणबेलगोला शहर में आयोजित किया जाता है. इस त्योहार को महाप्रतिष्ठा भी कहा जाता है. महामस्तकाभिषेक शब्द तीन शब्दों से मिलकर बना है- महा (महान), मस्तक (सिर), और अभिषेक (अभिषेक). इसका शाब्दिक अर्थ है, 'सिर का अभिषेक समारोह

Mahamastakabhishek is a Jain festival celebrated to consecrate the statue of Lord Bahubali. This festival is held once every 12 years in the town of Shravanabelagola in Karnataka. This festival is also called Mahapratishtha. The word Mahamastakabhishek is made up of three words- Maha (great), mastaka (head), and abhishek (consecration). It literally means, 'consecration ceremony of the head

- पर्युषण, जैन धर्म का एक महत्वपूर्ण त्योहार है. इसे जैन धर्म का महापर्व भी कहा जाता है. यह त्योहार आमतौर पर हिन्दू कैलेंडर के मुताबिक, भाद्रपद महीने के शुक्ल पक्ष में मनाया जाता है. यह त्योहार श्वेतांबर और दिगंबर दोनों ही संप्रदायों द्वारा मनाया जाता है
- पूरे साल मे किये गए पाप और कटू वचन से किसी के दिल को जाने और अनजाने ठेस पहुंची हो तो क्षमा याचना करते है॥ एक दूसरे को क्षमा करते है और एक दूसरे से क्षमा माँगते है
- Paryushan is an important festival of Jainism. It is also called the Mahaparva of Jainism. This festival is usually celebrated in the Shukla Paksha of the Bhadrapad month according to the Hindu calendar. This festival is celebrated by both Shvetambara and Digambara sects.
- If the sins committed throughout the year and harsh words have hurt someone's heart knowingly or unknowingly, then people ask for forgiveness. They forgive each other and ask for forgiveness from each other.

jain sect /जैन सम्प्रदाय

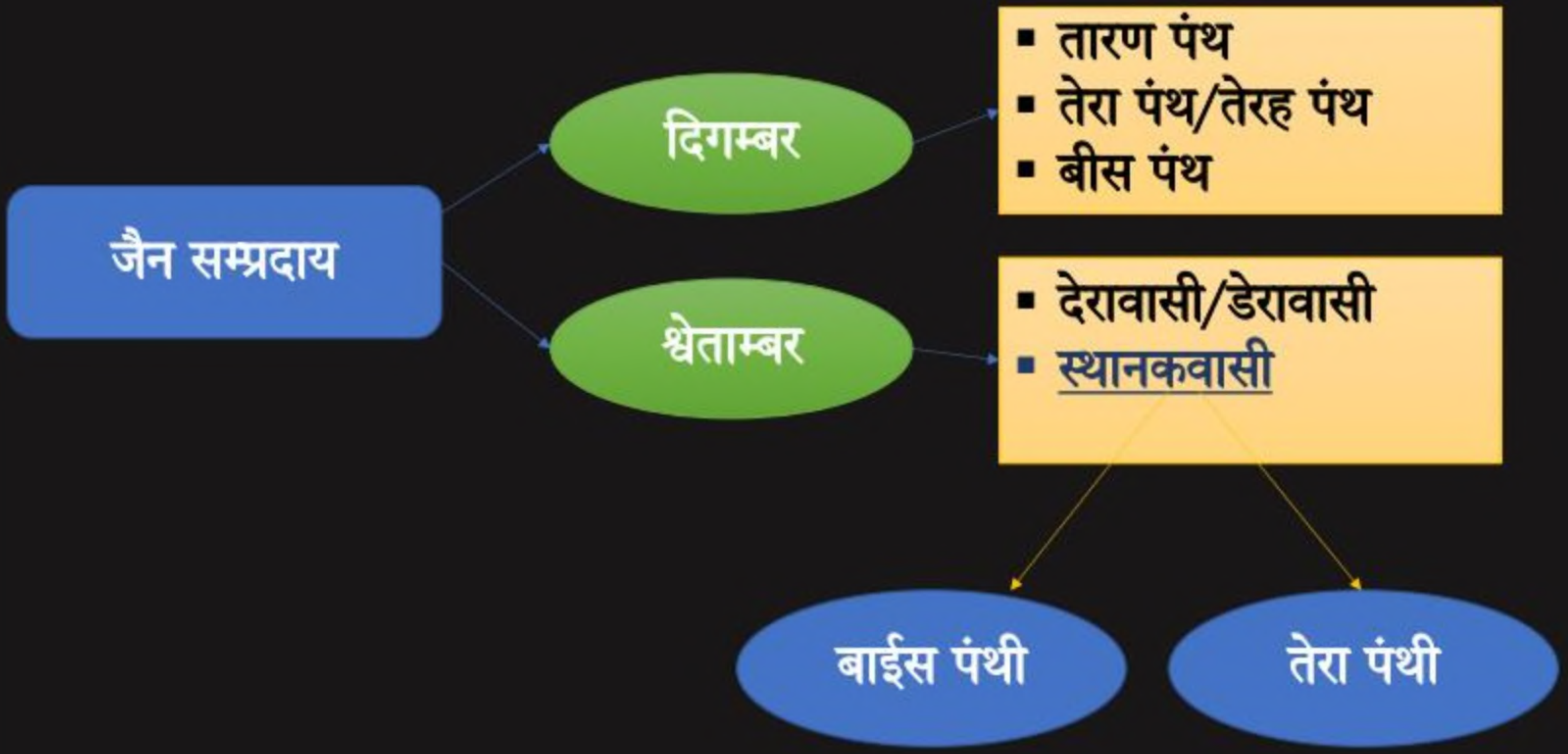

Five vows of Jainism/पंच महाव्रत

- चतुरायण धर्म — पार्श्वनाथ 23
- पंचायण धर्म — 24 → महावीर स्वामी
- Chaturayan Dharma
- Panchayan Dharma

1. Ahinsa (non-violence)/अहिंसा
2. Satya (truthfulness)/सत्य
3. Asteya (not stealing)/अस्तेय
4. Aparigraha (non-acquisition)/अपरिग्रह
5. Brahmacharya (chaste living)/ब्रह्मचर्य

5 → महावीर स्वामी

Three jewels of Jainism/जैन धर्म के तीन रत्न

पंचबालयति | Panchbalayati

1. वासुपूज्य-12 | Vasupujya-12
2. मल्लिनाथ-19 | Mallinath-19
3. नेमिनाथ-22 | Neminath-22
4. पार्श्वनाथ-23 | Parshvanath-23
5. महावीर-24 | Mahavir-24

★ तीर्थंकर, जो बाल ब्रह्मचारी हैं, उन्हें बालयति कहते हैं

Tirthankaras who are celibate from childhood are called Balayati

1. Right Knowledge/सम्यक ज्ञान
2. Right faith /सम्यक दर्शन
3. Right Action/सम्यक चरित्र